पद ८८

(राग: कानडा - ताल: धीमा त्रिताल)

अहा अहा अहाहा। अनादि एक घन अज अचल। मी एक घन अज अचल अमृतधाम, अकाम, नामरूप सोडुनियां, सदानंद सकल निगमाधार अपार पार सार निराकार परिपूर्ण काम झालों। स्वरूपीं निमालों। अविट धन ल्यालों, किति सुख अहा।।धु.।। ज्ञानरूप चिन्मार्तांड गुरुकृपाही असुनी, पंचभूत दृश्य जगसंसार असार देह परी हे नाहींसे झाले स्वरूपचि उरले, काय हे हो फळले,

भव सरले, भय हरले, गुजभरले, मन धाले, मन धाले, मन धाले, मन धालें।।१॥